Subject- Maithili (IInd semester)

Paper code- CC-9, MTL- 531

Topic - Sairindhreek charitr-chitran

Format- PDF

Name/contact- Dr. Sudhir Kumar Jha

Department of Maithili

Patna University

Mobile- 9661819662

email- drsudhirkrjha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

सैरिन्ध्रीक चरित्र-चित्रण

'उत्तरा' खण्डकाव्यक 'सैरिन्ध्री' महाभारतक मुख्य नायिका द्रौपदी अछि। ओ पञ्चपाण्डवक संग विराटनगर मे अज्ञातवासक अवधि मे सैरिन्ध्री नाम सँ जात अछि। ओ पाञ्चाल नरेश राजा द्रुपदक पुत्री अछि जकरा अर्जुन 'मत्स्य-चक्षु वेधि' स्वयंवर मे प्राप्त कएलनि आ जे कुन्तीक आदेशेँ पंचपाण्डवक सम्मिलित पत्नी बनि पाण्डव लोकनिक सतत संग देलनि।

सैरिन्ध्री चरित्रक अनुपम अछि। पाँच पति सँ समान स्नेह रखनिहारि ओ भारतीय इतिहासक अप्रतिम पात्री छिकीह। वनवासहु काल मे द्रुपद हुनका अपन राजमहल मे रखबाक प्रयास कएलनि मुदा ओ नहि रहलि। ओकर विचार छल जे सुख-दुख मे पतिक संग रहब पतिव्रता स्त्रीक लेल अनिवार्य छिक। दुखक समय मे स्वामीक संग छोड़ि अन्यत्र सुखोपभोग करब अनीति अछि।

सैरिन्ध्री राजपुत्री होइतहुँ दासीक कार्य करबा मे कनेको अपन अपमान नहि बुझैत अछि। दासी रूपेँ ओ अपन कार्यक प्रभावेँ समस्त मत्स्य जनपद मे सम्मान प्राप्त कएल। शृंगार-साधन मे ओ अतुलनीय अछि। राजा विराटक अन्तःपुर मे सैरिन्ध्रीक आगमन सँ जेना चमत्कार भए गेल। ओ शृंगारक समस्त विधा सँ अवगत अछि। ओ राजा विराटक अन्तःपुरक रनिवासी लोकनि मे शृंगारक आवेश आनि दैत अछि। नव प्रकारक परिधान, आभूषण, अंगराग, सौरभ सबकिछु मे नवीनता आनि दैत अछि। अन्तःपुरक सौन्दर्य मे अपार अभिवृद्धि भए जाइत अछि। कविक शब्द मे,

लता पल्लवित रहितहुँ फूल फुलइतहुँ पहिलुक बाग।
जनि-वसन्त-श्री आबि सजाओल नवरस सुरभि पराग॥
बुझि पड़इछ श्यामा यामिनि कें ऋतु शारदी तुलाय।
कमल सरस ज्योत्स्ना शृंगारित शुचि-रुचि नवे बनाय॥

एतबे धरि नहि, अओरो अपूर्व चमत्कार होइत अछि जखन प्रौढ़ वयस सुदेष्णा रानीक रूप छवि मे नवीन रंगक समावेश भए जाइत अछि जनिका देखि नबोढ़ लोकनि आश्चर्यचकित रहि जाइत अछि। सैरिन्ध्रीक शृंगार क्रिया कौशल सँ अन्तःपुरक सकल स्त्रीगण ओकर अनुगामिनी प्रशंसिका भए जाइत अछि। एहन बूझि पड़ैत अछि जेना पद्मिनीक कलिका मे रस आ सुरभि भरए लेल अरुणिम प्रभात भेल होअए। सैरिन्ध्रीक शृंगार-साधना सँ —

Scanned with CamScanner

"अस्तु, प्रसिद्धिक फूल फुलायल ग्राम गमगमा गेल।
दूर-दूर धरि सौरभ लय वन-वात महमहा देल।"

सैरिन्ध्रीक सौन्दर्य सँ राजा विराटक साइ आ सेनापति कीचक ओकरा दिस आकृष्ट होइत अछि। ओ विविध प्रकारक उपाय सँ सैरिन्ध्री कें वशीभूत करए चाहैत अछि। परञ्च सैरिन्ध्री गंगाजल-सन पवित्र अछि। जेना जाह्नवीक जलधारा किन्नहुँ अपवित्र नहि होइत अछि तहिना कीचकक कुचक्रक कनेको प्रभाव सैरिन्ध्री पर नहि पड़ैत छैक। ओ अपन पति लोकनि कें कहि कीचकक वध करबा दैत अछि।

सैरिन्ध्री कलाप्रेमी अछि। ओ दूरदृष्टि सँ सम्पन्न सेहो अछि। उत्तराक नखन कला-परीक्षण होइत अछि तखन ओ अपन सासु कुन्तीक देल श्रीमहार उतारि उत्तरा कें पठिराए दैत अछि। एकहि काज सँ ओ दूटा उद्देश्यक पूर्ति करैत अछि। उत्तरा कें उपहारो दैत अछि आ अपन कुलवधूक रूपें वरण सेहो करैत अछि।

सैरिन्ध्री मे अपूर्व सहिष्णुता अछि। राजमहिषी भए कए सेहो ओ परिचारिकाक कार्य धरि करए मे नहि हिचकैत अछि। बुद्धिचातुरीक ओ स्वामिनी अछि। कीचक-वधक प्रेरिका रहितहुँ ओ सुदेष्णा कें प्रबोधै मे किछु नहि रखैत अछि।

Scanned with CamScanner